Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(3), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

आदिवासी उपन्यास : संवेदना के विभिन्न आयाम

दत्ता कोल्हारे

भूमिका :

वर्तमान में हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। सन् 1947 में अंग्रेजों की दासता से हमें आजादी मिली। आजादी प्राप्ति के उपरांत हमने जो रंगीन सपने देखे थे कि, अब कोई व्यक्ति भुखा नहीं सोएगा, कोई बिना कपडों के नहीं रहेगा, सबके सिर पर छत होगी और हर हाथ को रोजगार होगा; लेकिन लोगों द्वारा देखें सारे सपने टूट गए। जो लोग कभी हमारे 'रक्षक'थे वे ही हमारे 'भक्षक'बन बैठे। परिणामत: देश में अमीर और गरीब के बीच के खाई गहरी होती गई। इन सब में समाज का एक ऐसा वर्ग था जो आजादी के पहले और बाद में भी सदैव उपेक्षित रहा। वह है देश का आदिवासी समाज। जंगलों में स्वतंत्र रूप से जीवन जीने वाले आदिवासी हमेशा से ही अंग्रेजी अत्याचार से पीडित थे। अंग्रेजों ने सोची-समझी रणनीति के तहत आदिवासियों को कानूनन चोर, लुटेरे, डाकूआदि कहकर उन्हें गिरफ्तार करने तथा जंगलों से बाहर निकालने की कोशिश की। आदिवासियों के खिलाफ अंग्रेजों के बने कुछ कानून आज भी वैसे ही बने हुए है। जल, जंगल और जमीन जैसी मूलभूत अधिकारों के लिए संघर्षरत आदिवासियों को इक्कीसवीं सदी में विविध समस्याओं का सामना करना पड रहा है। इन्हीं समस्याओं को आदिवासी तथा गैर आदिवासी लेखकों ने अपने साहित्य का मुख्य विषय बनाकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया।

उपन्यास मानव जीवन की बृहत् संवेदनात्मक अनुभूतियों को चित्रित करने का सशक्त माध्यम है। इसी कारण आदिवासी जीवन केंद्रित हिंदी उपन्यासों में आदिवासी समाज की विविध संवेदनाओं तथा समस्याओं का अंकन किया गया हैं। काला पहाड, रेत, गगन घटा घहरानी, अल्मा कबूतरी, झुण्ड से बिछुडा, पाँव तले की दूब, पठार पर कोहरा, सूत्रधार, पिछले पन्ने की औरतें, मरंग गोंडा निलकंठ हुआ, जंगल जहाँ शुरु होता है, पार तथा ग्लोबल गाँव के देवता आदि अनेक उपन्यास आदिवासी संवेदनाओं से भरे उपन्यास है।

निरंतर संघर्ष करते हुए जीवन ज्ञापन करना आदिवासी समाज की मुख्य विशेषता है। आदिवासी उपन्यासों में लेखकों ने व्यवस्था द्वारा हुए अन्याय-अत्याचार,

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(3), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

शोषण, बेरोजगारी आदि बातों को उनकी विषमताओं के रूप में चित्रित है। 'विस्थापन'आदिवासी समाज की वर्तमान में प्रमुख समस्या है। पीढियों से अपनी जमीन पर रहने वाले आदिवासियों को जब बेदखल किया जाता है, तब उस समाज का दर्द कैसा होगा? उनकी अवस्था कैसी होती होगी? यह प्रश्न आदिवासी उपन्यासों में प्रमुख रूप से उभरकर सामने आया है। विस्थापित आदिवासी गरीब और सस्ते मजदूर मात्र बनकर रह गए हैं। आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यासों में आदिवासियों के विविध समस्याओं चित्रण निम्न रूप से प्रस्तुत हुआ हैं।

किसान से मजदूर बनते आदिवासी :

आदिवासी अपनी जमीन पर खेती कर अपना गुजरबसर करते थे। साथ जंगली संपदा से अपना पेट भरते थे। परंतु उनकी जमीन, जंगल, पहाडों पर कब्जा कर खनिज संपदा के उत्खनन हेतु जंगल काट दिये गए। जंगलों की सपाट जमीनों पर खदानों तथा कारखानों का निर्माण होने लगा। परिणामत: आदिवासी समाज अपना पेट पालने के लिए दर-ब-दर की ठोकरें खाने पर मजबूर हो गया। अपने उदार-निर्वाह हेतु यह समाज एक सस्ता मजदूर बनकर रह गया है।

आदिवासी जीवन केंद्रित उपन्यासों में इसी संवेदना का चित्रण किया गया है। आदिवासी समुदाय पहले जंगल से गोंद, तेंदुआ पत्ता, शहद आदि चीजें बाजार में बेचकर अपना निर्वाह करता था। परंतु अब जंगलों पर सरकार का अधिकार हो गया है। साथ ही आदिवासियों को कर्ज देकर महाजन उनकी जमीनें हडप लेते है। बेरोजगार आदिवासी आज मजदूरी करने पर विवश है। आदिवासियों की किसान से मजदूर बनने की व्यथा-कथा को उपन्यासकारों ने बखूबी ढंग से चित्रित किया है। 'पठार पर कोहरा' उपन्यास का पात्र होकाना बेचु तिवारी के यहां मजदूरी पर आता है। "लाह, गोंद, गोलोचन, वंशलोचन, शहद, लकडियाँ... पहले जीवन के लिए जरुरी सारे सरजाम जुटे जाते थे जंगलों से। बनोपज बाजार में बेचकर चार पैसे नकद भी हाथ में होते थे। जब से जंगल पर गेरमिंह को रोकछोका लगा है, सब चीजें सपना हो गई है। नमक भान चलाने के लिए आदिवासियों को अन्य दूसरे कई तरह के काम करने पडते है अब।"[1]

संजीव लिखित 'धार' उपन्यास में नायिका मैना अपना जीवन यापन करने हेतु धार रोपना, कोयला जमीन से निकालना, बर्तन और कपडे धोना आदि काम करती है। जब से झारखंड में खदाने खोदना शुरु हुआ है तब से वहां का आदिवासी समाज

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(3), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

बेसहारा हो गया है। उन्हें मजदूरी के अलावा कोई विकल्प बचा नहीं है। अपने परिवार के लालन-पालन के लिए खदानों में खून पानी की तरह बहाना पडता है। उपन्यास में लिखा हैं, "अभी जादातर अवैध कोयला खनन भी गड्ढों में पानी भर जाने से बंद है। कटनी के बाद नवम्बर-दिसंबर से चित्र बिकुल अलग हो जाता है। दिन में बुढें-बच्चों या कुछ औरतों को छोडकर जो भी जवान स्त्री-पुरुष मिलेगा, उँघा या सोया हुआ ही मिलता है। रात भर अवैध कोयला खनन में काम करने के बाद दिन को सोना।"[2]

कोई आदिवासी अगर अपने मालिक से किसी कारण कर्ज लेता है तो उसको यह कर्ज चुकाने के लिए सारी उम्र लग जाती है और अपने खेत से भी हाथ धोना पडता है। उपन्यास का पात्र जागो अपने ही खेत में मजदूर बनकर काम करता है। मनमोहक पाठक इस संदर्भ में कहते हैं, "भूखा जागो दोपहर एक बजे तक हल जोतते हुए पसीना गिराकर उसके खेतों को सिंचता है। खाने के लिए मालिक एक पाव सत्तु दे देता है। जागो फिर हल जोतना शुरु कर देता, तब तक जोतता जब तक कि सूरज डूब न जाता। लेकिन अभी उसे आराम करने का वक्त नहीं।... अभी बैलों के आराम करने का वक्त है। मालिक के बैल को आराम की जरुरत है। लेकिन मनुष्य जागो को नहीं। बैल जब तक चरने के लिए छोडे जाते, जागो तब तक मालिक का एक खास काम करता।"[3] जागो अज्ञानी है। उसके इसी अज्ञान का फायदा जमींदार उससे उठाता है। दिन-रात उससे मजदूरी ली जाती है। उपरोक्त संदर्भ से यह पता चलता है कि एक आदिवासी मजदूर को जानवर से बदतर जीवन जीना पडता है। एक मजदूर की कहानी कोई समझता ही नहीं। वह अपने पेट के लिए दिन-रात कही पर भी मेहनत करते रहते हैं।

मजदूर स्त्रियों की दुर्दशा का चित्रण भी उपन्यासकारों ने किया है। रमणिका गुप्ता के 'सीता' उपन्यास में कोयले की खदानों में काम करने वाली मजदूर स्त्रियों पर ठेकेदारों तथा सुपरवाइजरों की बूरी नजर होती है तथा कभी-कभी वे उनकी हवस का शिकार भी हो जाती है, या स्वयं वे इस तरह के संबंध रखने को मजबूर हो जाती है। बहुत कम पैसों पर इनसे काम लिया जाता है। 'जंगल जहाँ शुरु होता है' के काली को पांडे मजदूरी का दाम नहीं देता और उसे अपमानित करता है। जिससे काली निराश होकर उसके प्रति आक्रोश व्यक्त करता है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(3), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

गरीबी और आदिवासी :

आदिवासी जीवन केंद्रीत उपन्यासों में आदिवासी समाज की इस संवेदना को बखूबी ढंग से चित्रित किया है। आदिवासी कभी नहीं चाहता की वह गरीबी में जीवन ज्ञापन करें। जिस क्षेत्र में आदिवासी रहता आया है उसी क्षेत्र में सोना आदि बहुमूल्य खनिज संपदा प्राप्त होती है। उपन्यासकार के शब्दों में, "फिलीप की यह धरती हमारी सोना उगलती है और इस सोने की धरती की हम कंगाल संतान है।"[4] जंगल में रहने वाला यह जन समुदाय हमेशा गरीब ही रहा है। यहाँ भले ही जंगलों में खनिज, कोयला मिलता है, जिसके वे हकदार थे। सरकार ने उन्हें वहाँ से हटाकर विस्थापित कर दिया है। यहाँ जमीन से मिलने वाली संपदा पर देश का नहीं बल्कि राजनेताओं और सरकारी अफसरों तथा ठेकेदारों का प्रमुख हक़ होता है।

विकास के नाम पर आदिवासियों को हमेशा ही छला जा रहा है। उनके गरीबी, भोलेपन तथा अज्ञान का फायदा उठाकर उनपर अत्याचार किया जाता हैं। 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में इस संवेदना को उपन्यासकार ने दर्शाया है। सरकार की विकास प्रक्रिया में बरसाती आलू लगाने की योजना है। जो आदिवासी समाज को और अधिक दरिद्रता की ओर लेकर जाती है। इस योजना का अवलंबन उनसे जबरदस्ती करवाया जाता है। योजना यह थी कि, "कोयला बीघा ब्लॉक के छोटा हाकिम बी.डी.ओ. साहब और उनके स्टाफ एकाएक सक्रिय हो गए। कृषि पदाधिकारी, जनसेवक सबका पाट पर डेरा होता है। क्या तो बरसाती आलू लगाने है। पाट के सब परिचारों को चाहे वह असूर हो, बिरजिया हों, कोरवा हो, सबके लिए पूरे अनुदान पर बीज आया था। ग्यारह लाख का बीज और सात लाख की खाद भेजी थी सरकार ने। जो आदिम जाति परिवार जितना खेती करना चाहे उतना बीज दिया जाता था।"[5] लेकिन विचारणीय बात यह हैं कि इसमें जो आमदनी होती थी, उसे यह लोग खर्चा नहीं कर सकते थे। को-ऑपरेटिव बैंक आलू खरीदेगी और पैसे बैंक में ही जमा होगे। इन्हीं पैसों से अगले साल आलू लगाना होगा। बीच में किसी भी स्थिति में भी यह पैसा नहीं निकाल सकते। इस तरह विकास एक त्रासदी के रूप में आदिवासी इलाके में फैल रहा है। आदिवासियों के गरीबी की कई स्थितियाँ है जो उन्हें विकास की ओर न लेकर उन्हें अधिक दबाती है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(3), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

‘पार’ उपन्यास में आदिवासी स्त्रियाँ गाँव में अपना सामान बेचने जाती है। बदले में नुन-तेल, कत्थालता पाती है। आदिवासी पुरुष जंगल से गोंद, शहद निकालकर लाते हैं। जो इस समाज का व्यवसाय है। पर जंगलों में गाँव के लोगों का आना इनके अधिकार को खत्म कर देता है। परिणामत: आदिवासी अपने जीवन के सहारे को खो देते हैं। कहते है कि भूख आदमी को कुछ भी करने को मजबूर कर देती है। ‘अल्मा कबूतरी’ उपन्यास में कबूतरा जाति की स्त्रियाँ शराब बनाने में तरबेज होती है। वे महुए के फुल और गुड को भिगोकर शराब बनाती है। शराब बनाकर बेचना कबूतरा जाति का व्यवसाय है। इस व्यवसाय को बूरा नहीं माना जाता है। उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा कहना चाहती है कि कबूतरा जनजाति घुमंतू है और जहाँ काम मिला वही इनका घर गाँव होता है। इनका व्यवसाय चोरी करना, शराब बनाकर बेचना होता है। व्यवसाय के लिए इन्हें काम नहीं मिला तो यह मजबुरी में चोरी करते है।

‘पाँव तले की दूब’ उपन्यास में संजीव आदिवासी समाज की संवेदना को दर्शाते है। इसी के साथ महाजन आदि उनकी खेती से जबरन फसल काटकर ले जाते है। आदिवासियों का विकास होना तो दूर वे अपने परिवार का पेट भरने के बारे में सदैव चिंतित होते है। यही बात उपन्यासकार को सदैव दु:खी करती है।

उपन्यासकार संजीव आदिवासियों की दशा, त्रासदी, पीडा को स्वयं अनुभव करते है। इसका जिक्र करते वे समीर को आदिवासी इलाके में धान कटनी के दिनों में लेकर जाते है। “कई आदिवासी घरों में घुमाते हुए तुम मुझे ले चल रहे थे। वे इतने गरीब थे कि कपडों के नाम पर चिथडे को कच्छा पहने हुए थे। पुट्ठे तक खुले हुए थे। औरतें जैसे-तैसे बदन ढके हुए थीं। बच्चे कंकालों जैसे।”[6] समीर जब देखता है तो हक्का-बक्का रह जाता है। झारखंड के आदिवासी की परिस्थिति देखकर वह विचलित हो जाता है। संजीव इसी गरीब आदिवासी की परिस्थिति को देखकर संवेदना शून्य हो जाते है।

‘गगन घटा घहरानी’ उपन्यास में मनमोहन पाठक ने आदिवासी के परिस्थिति को दर्शाया है। आदिवासी जागो के पास खेती होते हुए भी वह ससुर के अत्यसंस्कार के लिए जमींदार से कर्ज लेता है। साथ ही कर्ज चुकाने अपना खेत रेहन पर लगा लेता है। जो जमींदार अपने नाम करवाता है और जागो को उसी के खेत में मजदूरी काम करना पडता है। इसका सिर्फएक कारण होता है कि जागो की हालत बिकट थी।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(3), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

वह मालिक के हाथों की कठपुतली बना था क्योंकि उसे कही अन्य जगह काम भी नहीं मिलता है। जागो अपने हालात के चलते अपने परिवार से महिनों नहीं मिल पाता। हिरामणि से उसकी दादी पुछती है, अपने पिता से मिली थी क्या। तब हिरामनी कहती है, "हाँ माँ आया था खेतपर। कह रहा था, हम सब उसके साथ ही आकर रहें। मालिक झोपडी बनाने के लिए जमीन और बाँस-खपडा दे देगा। वहाँ रहने से दो जून का खाना तो मिलेगा। और काम करने के लिए ही तो हम लोग पैदा हुए हैं।"[7] मतलब आदिवासी जागो अपने परिवार से दूर रहकर अपने गरीबी के चलते परिवार का लालन-पालन करता है।

वैश्वीकरण और विस्थापन :

वैश्वीकरण के प्रभाव से आदिवासियों के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न कर दी है। आदिवासी समुदाय शैक्षिक, राजनैतिक, विस्थापन और अस्मिता की समस्या से पूरी तरह से ग्रस्त है। जिस कारण उनका समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। देश के विकास के लिए जंगल-पहाड से खनिज, कोयला, बॉक्साईड खोदा जा रहा है। परिणामत: आदिवासी समाज के कस्बों, गाँवों पर कब्जा होने लगा है। इसी कारण आदिवासी बेघर और विस्थापित हो रहे है। इसी बात को उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में चित्रित करने की कोशिश की हैं।

'गगन घटा घहरानी' उपन्यास में मनमोहन पाठक ने विस्थापित आदिवासी समाज का विवेचन किया है। सामंत रायबहादुर के द्वारा जबरन कब्जा किए गए उनके खेतों से दिन दहाडे फसल काटकर ले जाइ जाती है। इस कब्जाकरण के कारण पैरू गुनी विचार करता है, "जंगल छोटा होता जा रहा है और इतिहास बडा से बडा। पर रोज इतिहास से नए-नए अध्याय जोडती यह दुनिया पठार पर उसे इस जंगल को, जंगल में बसे गाँवों को क्या दे रही है।"[8] आदिवासी पैरू गुनी अपने खेतों पर जबरन होते कब्जें से चिंतित है। आज पैरू ही नहीं बल्कि तमाम आदिवासी समाज इस पीडा से चिंतित नजर आता है। आज जंगल छोटे होते जा रहे हैं। जिसके कारण जंगलों पर कब्जा और खनिजों का उत्खनन है। इस काम के लिए पेडों को काटा जाता रहा है। इतिहास के पन्नों पर देश ऊँचाई पर जा रहा है। लेकिन आदिवासी गाँवों को हमेशा अभावग्रस्तता का जीवन जी रहा है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(3), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

आदिवासी समाज विस्थापन की पीडा को भोग रहा है। 'पार'उपन्यास में वीरेंद्र जैन ने आदिवासी विस्थापन की संवेदना को दर्शाया है। इस उपन्यास में जल पर बाँध की योजना के कारण आदिवासियों को विस्थापित होना पडता है। घुरे साब आदिवासियों को समझाता है कि सरकार इस क्षेत्र की प्रगती के लिए 'राजघाट बाँध' बनवा रही है। घुरे साव लोगों से कहता है, "इस आजाद देश में एक सरकार नाम की भी चीज है जो सबका भला सोचती है। हर दम दूसरों की भलाई के उपाय सोचती रहती है। दूसरों की सुख-सुविधा के लिए मगज-मारी करती रहती है।... वही बनवा रहें है राजघाट पर बाँध"[9] आदिवासियों ने देखा कि राजघाट पर बेतवा नदी पर बाँध बँधने के कारण गाँव में बाढ आ जाती है और लोगों को गाँव-घर छोडकर चंदेरी में डेरा डालने पर लाचार होना पड रहा है। अपने खेती का मुआवजा मिलने के लिए प्रतीक्षा करनी पड रही है। यह मुआवजा अफसरों के तिजोरी में जाता है। वह मुआवजा आदिवासी समाज के पास आता भी नहीं है।

'पाँव तले की दूब'उपन्यास में संजीव ने आदिवासी समुदाय को किस तरह भूमिहीन किया जाता है इसको चित्रित किया है। "यहाँ के जन अर्थाभाव के कारण जो भी काम मिले वो करते है। बडे-बडे उद्‌योगपति आदिवासियों की जमीन खरीद लेते है वहाँ कारखानों का निर्माण करके उन्हें भूमिहीन बनाकर मजदूरी के लिए मजबूर बनाते है।"[10] संजीव बताना चाहते है कि यहाँ आदिवासी जन समुदाय अपने आर्थिक स्थिति के कारणवश हाथ में जो भी काम मिले उसे करता है। नगर के अमीर उद्‌योगपति कई षडयंत्र खेलकर उनसे जमीन हडप लेते है। उस जमीन पर फिर कारखाने खोले जाते है। जिससे वे आदिवासी समाज को भूमिहीन बनाते है और विस्थापित किया जाता है।

आदिवासी विस्थापित होते है। आदिवासी के लिए लडाई लडनेवालों को एक तो नक्सली करार देकर उन्हें जेल में बंद कर दिया जाता है। वास्तव में आदिवासी समाज पर अन्याय होता है। जिनकी जमीन पर कारखाने लग रहे हैं उन्हें जमीन से बेदखल किया जा रहा है। आज आदिवासी अपने ही घर से बेघर हो गया हैं। अपने ही गाँव में बेगाना बन गया है। आदिवासी के जमीन पर कब्जा उन्हें मिठा-मिठा बोलकर, उन पर अत्याचार कर, उन्हें मजबूर करके या डाकु बनाकर, नक्सली कहकर भगाया जाता रहा है या मार दिया जाता है। आदिवासी विस्थापन इस समाज को अंदर से अंदर कुतर-कुतर कर ओर अधिक खोकला कर रहा है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(3), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

आदिवासी स्त्रियों की समस्याएँ :

आदिवासी स्त्री संवेदनाओं तथा उनकी समस्याओं से हम पूर्णरूप से अनभिज्ञ है। उसके भीतर छिपी मानवीय संवेदनाओं तथा उनके उत्पीडन को जानने का कोई प्रयास नहीं करता। उसे सिर्फएक भोग की वस्तु के रूप में देखा जाता है।आदिवासी उपन्यासों में स्त्री संवेदना को उपन्यासकारों ने उजागर करने का प्रयास किया है।

'अल्मा कबूतरी'उपन्यास आदिवासी कबूतरा जाति पर आधारित है। मैत्रेयी पुष्पा ने नायिकाओं को नारी सुलभ कोमलता तो दी है पर साथ ही कंटीली राहों पर चलने का हुनर भी दिया है। जब कदम बाई अपने फरार पति जंगलिया से मिलने गई तो नारी स्वभावश, "सोलह शृंगार किए। गोबर से रगडकर पाँव, बाहे, एडियाँ चिकनी हो गई। सरमन की औरत से बकरी का दूध माँगकर चेहरे पर मला और पानी के छिटे देकर निखारा, कांति दो दुनी हो गयी। एक बिंदी की तलाश में डेरे-डेरों फिरी थी कि रूप सौगुना हो जाए।"[11] यह नारी जात का स्वभाविक गुण है। वह भी अपने पति के लिए साज शृंगार करना चाहती है। पर यह समाज उसे सिर्फकाम वासना की नजर से देखता है। स्त्री को भी अपना जीवन जीने का अधिकार होना चाहिए। इस समाज की देखने की दृष्टि बदलनी चाहिए। दूसरी तरफ आदिवासी स्त्री की पीडा को कदमबाई के रूप में सामने लाने का प्रयास लेखिका ने किया है।

'रेत'उपन्यास में स्त्रियाँ समाज के दोगले व्यवहार से मजबूर होकर वेश्या व्यवसाय करती हैं। भगवानदास मोरवाल कंजर जाति का चित्रण इस उपन्यास में करते हैं। कंजर जाति की स्त्रियां देहव्यापार का कार्य करती है। इस व्यवसाय को वह बूरा नहीं मानते है। वह कहती हैं -"बिना तहजीब के क्या खेलावडी, इसलिए लाइन में डालने से पहले तहजीब जरुरी है। इससे उसके नाज नखरों में थोडा पैनापन आ जाता है। अगर थोडा बहुत गाना-बजाना आ जाए तो क्या कहने? इस धंधे में ऐसे ही खिलावडी के पास सबसे ज्यादा इज्जतदार आते है।"[12] आदिवासी स्त्री अपने पेट के लिए मजबूरी में वेश्या व्यवसाय करती है। आदिवासी कंजर स्त्री कभी किसी के सामने हार नहीं मानती है। कमला बुआ के माध्यम से उपन्यासकार ने यही बताने का प्रयास किया है।

'पठार पर कोहरा'उपन्यास में आदिवासी स्त्री के स्थिति को दर्शाया गया है। आदिवासी स्त्री शोषित होने के लिए अभिशप्त है। उपन्यास की पात्र रंगेनी का जीवन

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(3), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

विधवा और संघर्षपूर्ण रहा है। 'पठार पर कोहरा'उपन्यास में रंगेनी के रूप में आदिवासी समाज की एक विधवा और अकेली स्त्री के संघर्ष को दिखाया है। स्त्री सुरक्षा को लेकर भी यहाँ लेखक ने कई सवाल उठाए है। अकेली और शारीरिक रूप से कमजोर स्त्री का हर जगह शोषण होता है।

आदिकाल से समाज ने स्त्री को दबाए रखने के लिए जाल बिछाकर रखे हुए है। इस पुरुष मानसिकता वाला समाज अपने बराबर अगर स्त्री को देखते है तो इनकी रोंगटें खडे होते है क्रोध में। अपने वर्चस्व को कायम रखने में इन्हें संतोष मिलता आया है। इसका जिक्र संजीव अपने उपन्यास में करते है। "पुरुषसत्ता ने नारी के इर्द-गिर्द आदिकाल से ही ऐसे पाप-पूण्य, सौभाग्य और दुर्भाग्य के खौफनाक जाल बिछा रखे है। धर्म का हौआ खडा किया है। पाप-पूण्य के भय इतने मारक है कि शोषण के विरुद्ध मुँह खोलना तो दूर, सोचने से भी डरती है स्त्रियाँ। शोषण की पराकाष्ठा है यह।"[13] एक तरह से कहाँ जाएं तो स्त्री को चार दिवारी के अंदर कैद कर रखा गया है। इन्हें पुरुषों के सामने नजर उठाकर देखने का भी अधिकार नहीं रहता है।

'जो इतिहास में नहीं है'उपन्यास में स्त्रियों की दिलेर वृत्ति, समर्पण भाव आदि को दर्शाया गया है। बिहार के 'रोहतास गड'की रक्षा करते हुए शेरशाह सूरी की फौज का डटकर मुकाबला करनेवाली सिनगी, कईली और चम्पों को आदर्श स्त्रियों के रूप में चित्रित किया है।

अंततः हम कह सकते है कि आदिवासी केंद्रित उपन्यासों में आदिवासी संवेदना का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। आदिवासियों की समस्याएँ, जीवन-संघर्ष, उत्पीडन आदि को उजागर करने का प्रयास उपन्यासकारों ने किया है। कभी अपने जंगलों, जमीनों के मालिक कहें जाने वाले आदिवासी समाज के नसीब में दूसरों की खेतों में मजदूरी करना लिखा है। उनकी स्थिति को देखकर ऐसा लगता है कि, तील-तीलकर मरने के लिए इनका जन्म हुआ है। जंगल मात्र पर्यावरणीय या प्राकृतिक संदर्भ न होकर आदिवासी जनजाति की व्यथा-कथा को उजागर करता है। सभी आदिवासी सरकारी व्यवस्था तंत्र तथा जमींदार-साहुकारों के आतंक तथा अफसरों के आतंक के से पीडित विस्थापन ही इस समाज की सबसे बडी समस्या है। जिसके चलते आज भी इस समाज के पुरुष-स्त्री दर-ब-दर की ठोंकरे खाने के लिए मजबुर है। उपन्यासकार ने

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:10(3), October, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

आदिवासियों के जीवन संघर्ष के साथ ही उनके नष्ट होती संस्कृति तथा परंपराओं के बारे में गहन चिंता प्रगट की है।

संदर्भ :

1. पठार पर कोहरा, राकेश कुमार सिंह, पृ. 47
2. सुत्रधार, संजीव, पृ. 37
3. गगन घटा गहरानी, मनमोहन पाठक, पृ. 13
4. पाँव तले की दूब, संजीव, पृ. 76
5. ग्लोबल गाँव के देवता, रणेंद्र, पृ. 95
6. पाँव तले की दूब, संजीव, पृ. 14
7. गगन घटा गहरानी, मनमोहन पाठक, पृ. 12
8. गगन घटा गहरानी, मनमोहन पाठक, पृ. 169
9. पार, वीरेंद्र जैन, पृ. 13
10. पाँव तले की दूब, संजीव, पृ. 11
11. अल्मा कबूतरी, मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 21
12. रेत, भगवानदास मोरवाल, पृ. 58
13. पठार पर कोहरा, राकेश कुमार सिंह, पृ. 229